अध्याय-3

सूचनादाताओं का परिचयात्मक पृष्ठ भूमि :
पारिवारिक पृष्ठ भूमि :

व्यक्ति और परिवार एक दूसरे से इतने घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं कि एक के अस्तित्व के बिना दूसरे की कल्पना से नहीं की जा सकती। व्यक्ति परिवार को प्रभावित करता है, और परिवार व्यक्ति को। जब व्यक्ति नवजात शिशु के रूप में परिवार में जन्मता है जो स्वयं अपने आप में असहाय होता है, ऐसी स्थिति में परिवार ही उसकी देखभाल और पालन–पोषण करता है। जैसे–जैसे यह बड़ा होता जाता है परिवार की परम्पराऐं और संस्कार ही उसके चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। परिवार का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश उसे एक दिशा प्रदान करता है, यही कारण है कि व्यक्ति के परिचय हेतु उसके परिवार की जानकारी प्राप्त की जाती है, क्योंकि परिवार ही व्यक्ति के चरित्र और आचार विचारों का जनक है और जब वही व्यक्ति स्वयं अपने परिवार का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है तो वह परिवार के अन्य सदस्यों को अपने चरित्र, आचार, विचार और व्यवहार से प्रभावित करता है। वास्तव में व्यक्ति पालने से लेकर शमशान घाट तक अपने परिवार के आदर्शों संस्कारों व परम्पराओं से जुड़ा रहता है।

परिवार में वरिष्ठ सदस्य (मुखिया) का विशेष महत्व होता है, क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य उसके चरित्र, विचारों और आदर्शों से प्रभावित होते हैं। यदि मुखिया आदर्शवादी, चरित्रवान्, सदाचारी, विवेकशील और धैर्यवान है तो वह अपने परिवार के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है और उसका प्रयास यही रहता है कि परिवार के अन्य सदस्य भी उसके व्यवहारों का अनुकरण करते हैं। लेकिन यदि परिवार के मुखिया का आचरण इसके विपरीत होता है तो वह परिवार के समक्ष अपनी उत्कृष्ट छवि प्रस्तुत नहीं कर सकता। धीरे–धीरे परिवार पर उसका नियन्त्रण समाप्त हो जाता है और परिवार का प्रत्येक सदस्य अपनी मनमानी करने लगता है जिससे कि परिवार की सुख और शान्ति खतरे में पड़ जाती है।

यदि परिवार का वरिष्ठ सदस्य कोई व्यसन यथा शराब पीना, जुआ खेलना, वेश्यावृत्ति या किसी नशीले पदार्थ का सेवन करने लगे, तो उसके अनिष्टकारी परिणाम केवल मुखिया को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण परिवार को भुगतने पड़ते हैं। बच्चों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है, परिवार की माली हालत खस्ता हो जाती है। आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है। परिवार के युवक और युवतियों के चारित्रिक पतन की सम्भावना प्रबल हो जाती है। अतः पारिवारिक पृष्ठभूमि के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। परिवार का उचित पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा और मार्ग दर्शन जहाँ बच्चों के

कल्याण और भावी जीवन की सफलता निश्चित करते हैं, वहीं इनका अभाव उन्हें गलत रास्ते पर चलने में सहायक हो सकता है। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अन्य किसी भी सामाजिक संस्था की तुलना में परिवार व्यक्ति को सबसे अधिक प्रभावित करता है। व्यक्ति के परिवार के सदस्यों के साथ सम्बन्ध पूर्णतया अनौपचारिक और सबसे निकटतम होते हैं, और इसी कारण व्यक्ति को परिवार में पूर्ण अपनत्व प्राप्त होता है। साथ ही परिवार में व्यक्ति को सन्तुष्टि एवं वंशवृद्धि का अवसर भी प्राप्त होता है। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति ''बिना पतवार की नाव'' के समान है जिसे कोई भी किनारा नहीं मिलता, क्योंकि परिवार न केवल व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है अपितु उसे नियंत्रित भी करता है। अतः कहा जा सकता है कि परिवार समाज की धुरी है और सामाजिक संरचना में परिवार की केन्द्रीय स्थिति है।

<u>नशाखोरों के परिवार के प्रकार</u> :

शोधकर्ता ने एकल और संयुक्त दोनों ही प्रकार के परिवार की प्रवृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन किया तो पाया कि दोनों ही प्रकार के परिवारों में नशाखोरी की प्रवृत्ति है।

तालिका संख्या 3.1
परिवार के प्रकार

क्र.सं.	परिवार के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	180	60.00
2.	एकल परिवार	120	40.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन से यह प्रदर्शित होता है कि एक परिवारों के सदस्यों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों के सदस्य अधिक संख्या नशाखोरी की प्रवृत्ति में लिप्त हैं। निश्चित रूप से परिवार के मुखिया नियंत्रण जितना एकल परिवारों में देखने को मिलता है उतना संयुक्त परिवार में देखने को नहीं मिलता। यही कारण है कि संयुक्त परिवार के सदस्य अधिक मात्रा में नशाखोरी की प्रवृत्ति में लिप्त होते हैं। उल्लेखनीय है कि विज्ञान संचार के साधनों, औद्योगिकरण और नगरीकरण के फलस्वरूप यद्यपि संयुक्त परिवार विघटित होते जा रहे हैं फिर भी प्रस्तुत शोध के 300 उत्तरदाताओं में 180(60.00%) अभी भी संयुक्त परिवार के सदस्य हैं जबकि केवल 120(40.00%) एकल परिवार के सदस्य हैं।

परिवार में सदस्यों की संख्या :

संयुक्त परिवारों में चूँकि सदस्य संख्या एकल परिवारों की अपेक्षाकृत एकल परिवार से कम होता है।

संयुक्त परिवार और एकल परिवार के सदस्यों की संख्या निम्न तालिका के माध्यम से दर्शायी गयी है।

तालिका संख्या 3.2
परिवार के सदस्यों की संख्या

क्र.सं.	सदस्यों की संख्या	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1.	1	19	06.33
2.	2	23	07.66
3.	3	34	11.33
4.	4	45	15.00
5.	5	69	23.00
6.	6	53	17.66
7.	7	32	10.66
8.	8	15	05.00
9.	8 से अधिक	10	03.33
	योग	**300**	**100.00**

तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 19 व्यक्ति ऐसे हैं, जो कि अकेले हैं। 23(7.66%) परिवार ऐसे हैं जिनकी सदस्य संख्या दो, 34(11.33%) परिवार ऐसे हैं जिनकी सदस्य संख्या तीन है, 45(15.00%) परिवार ऐसे हैं जिनकी सदस्य संख्या चार है।

शोध विषय में पति–पत्नी तथा दो बच्चों अर्थात् चार सदस्यों तक संख्या वाले परिवारों को ही एकल परिवार की श्रेणी में रखा गया है, तथा पाँच या पाँच से अधिक

सदस्यों वाले परिवारों को संयुक्त परिवार की श्रेणी में रखा गया है। तालिका में दर्शित है कि संयुक्त परिवारों की संख्या 180 है अर्थात् कुल उत्तरदाताओं की संख्या 60.0 प्रतिशत है, जबकि एकल परिवारों की संख्या 120 है अर्थात् कुल उत्तरदाताओं की संख्या का 40.00 प्रतिशत है।

अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता संयुक्त परिवारों के सदस्य हैं। यह सही है कि विज्ञान, संचार, यातायात, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है और एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। लेकिन तथ्य यह दर्शाते हैं कि हमारे समाज में आज भी संयुक्त परिवार प्रणाली प्रभावी रूप से विद्यमान है।

पारिवारिक रूप से रहने के लिये आवास की आवश्यकता पर्यावरण के अनुसार होती है जो निम्न तालिका में दर्शित है।

तालिका संख्या 3.3

आवासीय दशाओं एवं पर्यावरण

क्र.सं.	आवासीय दशाओं तथा पर्यावरण	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	सन्तुष्ट	150	50.00
2.	असन्तुष्ट	39	13.00
3.	उदासीन	111	37.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका में यह प्रदर्शित किया गया है कि 150(50.00%) निर्दर्शित लोगों ने आवासीय दशाओं को सन्तुष्ट बताया। 111(37.00%) निर्दर्शित असन्तुष्ट पाये गये हैं। क्योंकि 39(13.00%) निर्दर्शित उदासीन पाये गये क्योंकि असन्तुष्ट लोगों के परिवारों के मकानों में वायु तथा प्रकाश का अभाव पाया गया है। जो कि परिवारों को पर्यावरण ने परिवारों को दूषित किया है।

उत्तरदाताओं का व्यवसाय :

व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं की विभिन्न श्रेणियाँ निम्न तालिका में दृष्टव्य हैं :–

तालिका संख्या 3.4
उत्तरदाताओं का व्यवसाय

क्र.सं.	श्रेणी	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	श्रमिक	100	33.33
2.	रिक्शा चालक	100	33.33
3.	ऑटो चालक	100	33.33
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका में यह प्रदर्शित किया गया है कि 100(33.33%) श्रमिक वर्ग के लोगों का है। रिक्शा चालक का 100(33.33%), ऑटो चालक का 100(33.33%) हैं।

उत्तरदाताओं की आयु :

उत्तरदाता ने सूची में केवल उन्हीं युवाओं को सम्मिलित किया गया है जो कि तालिका 18–60 वर्ष तक के हैं क्योंकि प्रस्तुत शोध युवा वर्ग से जुड़ा हुआ है। जोकि तालिका संख्या 3.4 में दृष्टव्य है।

तालिका संख्या 3.5

उत्तरदाताओं की आयु

क्र.सं.	आयु वर्ग	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	18–28	85	28.33
2.	28–38	99	33.00
3.	38–48	43	14.33
4.	48–58	32	10.66
5.	58–60	26	08.66
6.	60 से अधिक	15	05.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 28–38 आयुवर्ग के उत्तरदाता सर्वाधिक 99(33.00%) हैं जबकि 18–28 आयुवर्ग के उत्तरदाता 85(28.33%) हैं। और 38–48 आयुवर्ग के उत्तरदाता 43(14.33%) हैं। साथ में 48–58 आयुवर्ग के उत्तरदाता 32(10.66%) हैं 58–60 आयुवर्ग के उत्तरदाता 26(8.66%) हैं अन्त में 60 वर्ष से अधिक आयु के उत्तरदाता 15(5.00%) हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जब युवाओं की उम्र 25 वर्ष हो जाती है तो वे अच्छे और बुरे कार्य की जानकारी अच्छी तरह से कर सकते हैं, और वे स्वयं निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं। अतः वे अपनी इच्छानुसार ही नशा सेवन में लिप्त हो जाते हैं।

उत्तरदाताओं की मासिक आय :

उत्तरदाताओं की मासिक आय विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत निम्न तालिका द्वारा दर्शायी गयी हैं।

तालिका संख्या 3.6

उत्तरदाताओं की मासिक आय

क्र.सं.	आय वर्ग	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	1000–3000	45	15.00
2.	3000–4000	48	16.00
3.	4000–5000	45	15.00
4.	5000–6000	63	21.00
5.	6000–9000	54	18.00
6.	7000 से अधिक	45	15.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 63(21.00%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 5000–6000 रुपये के बीच है, 54(18.00%) उत्तरदाताओं ने अपनी आय 6000–9000 के बीच बताया, 48(16.00%) उत्तरदाताओं

ने अपनी मासिक आय 3000–4000 के बीच बताई, 45(15.00%) सूचनादाताओं ने शोधकर्ता को अपनी आय 1000–3000 के बीच बताया जो बहुत कम है।

पारिवारिक आय :

सामान्यतया एकल परिवार में कमाने वाला एक ही व्यक्ति है संयुक्त परिवार में कमाने वाले एक से अधिक होते हैं। शोधकर्ता दाताओं से पारिवारिक आय की जो जानकारी हासिल की है उसको दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 3.7

पारिवारिक कुल आय

क्र.सं.	आय वर्ग	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	1000–2000	62	20.66
2.	2000–3000	49	16.33
3.	3000–4000	83	27.66
4.	4000–5000	67	22.33
5.	5000–6000	28	09.33
6.	6000 से अधिक	11	03.66
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका में प्रथम तीन श्रेणियों को निम्न मध्यम वर्ग में रखा जा सकता है, ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या 194 है। अर्थात् कुल संख्या का 64.66 प्रतिशत है। शेष 106 उत्तरदाताओं को उच्च–मध्यम वर्ग की श्रेणी में

रखा जा सकता है। जो कि कुल संख्या के 35.33 प्रतिशत है।

अतः तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता मध्यम वर्ग से सम्बन्धित हैं।

तालिका संख्या 3.8

आय की पर्याप्तता

क्र.सं.	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	सन्तोषजनक	101	33.66
2.	असन्तोषजनक	199	66.34
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त समंकों के आधार पर 199(66.34%) उत्तरदाता अपनी आय से सन्तुष्ट नहीं हैं, अर्थात् वे अपनी आय को अपने भरण–पोषण आदि के लिये पर्याप्त नहीं मानते। जबकि 101(33.66%) सूचनादाताओं ने अपनी आय की पर्याप्तता से सन्तुष्ट हैं। अतः सन्तोषजनक उत्तरदाताओं की आय कम है।

तालिका संख्या 3.9

पारिवारिक आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

क्र.सं.	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	212	70.66
2.	नहीं	88	29.33
	योग	**300**	**100.00**

सीधा अर्थ यही है कि उनके पास इस निरन्तर बनी रहने वाली समस्या का कोई समाधान नहीं है। उपर्युक्त तालिका प्रदर्शित करती है 212(70.66%) उत्तरदाताओं ने अपनी पारिवारिक आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव से सन्तुष्ट हैं। जबकि 88(29.33%) उत्तरदाता पारिवारिक, आर्थिक स्थिति पर प्रभावों से सन्तुष्ट नहीं हैं।

परिवार में किसे मालूम है :

परिवार के कितने सदस्यों को नशे के सेवन के बारे में मालूम है अनेक उत्तरदाताओं ने बताया कि घर से बाहर नशे का सेवन करने के कारण घर के किसी सदस्य को नहीं मालूम होता और सेवन के कुछ समय बीत जाने पर वे घर लौटते हैं तो घर के किसी भी सदस्य को सन्देह नहीं हो पाता है लेकिन इसके विपरीत कुछ उत्तरदाताओं ने बताया कि उनकी पत्नियों को इसके बारे में जानकारी होती है, यह कथन निम्न तालिका से स्पष्ट होते हैं।

तालिका संख्या 3.10

पारिवारिक सदस्य को नशा के सम्बन्ध में जानकारी

क्र.सं.	किसे मालूम है	संख्या	प्रतिशत
1.	किसी को नहीं	138	46.00
2.	केवल पत्नी को	79	26.33
3.	छोटे भाई–बहिन को	34	11.33
4.	माता–पिता को छोड़कर सभी को	27	09.00
5.	परिवार में सभी को	22	07.33
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं 138(46.00%) ने बताया कि वे नशे का सेवन घर से बाहर मित्रों के साथ अथवा एकान्त स्थान में करते हैं। अतः परिवार में किसी को नहीं मालूम कि वे नशा करके घर आते हैं। अनेक उत्तरदाता तो सावधानी बतौर शराब की दुर्गन्ध को छिपाने के लिये पान, सौंफ व इलायची खा लेते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य नशे के पदार्थ जैसे– मैनड्रिक्स, ब्राउन सुगर, भाँग आदि की तो गन्ध के आधार पर पहचान ही नहीं हो पाती। अतः उनका यह भेद सुरक्षित रहता है। 79(26.33%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके नशे के बारे में उनकी पत्नियों को तो मालूम है। 34(11.33%) उत्तरदाताओं ने छोटे भाई बहिनों को जानकारी हो जाती है। साथ में 27(9.00%) उत्तरदाताओं ने माता–पिता को छोड़कर सभी को जानकारी हो जाती है। 22(7.33%) उत्तरदाताओं ने शोधकर्ता को बताया कि परिवार में सभी को नशे के सन्दर्भ में जानकारी है।

अनेक उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके नशे के बारे में उनकी पत्नियों को तो मालूम है पर घर के अन्य को नहीं। पत्नी से उनके नशे के बारे में पूछा तो पत्नी इस पर आपत्ति स्वीकार नहीं करती हैं। पर परिवार की लोक लाज के कारण स्पष्ट विरोध नहीं करती और ना ही परिवार के अन्य सदस्यों को नशे के बारे में बताती हैं। मेरे पहुँचने पर घर के अन्य सदस्य सो चुके होते हैं, उनसे सुबह ही भेंट हो पाती है।

कुछ उत्तरदाताओं ने बताया कि वे घर पीते हैं तो छोटे भाई के कमरे में यदि अलग कमरा नहीं है तो छोटा भाई यह ध्यान रखता है कि कोई आ न जाये, इसके बदले में वे छोटे भाई को कुछ प्रलोभन भी देते हैं, केवल माँ–बाप से छिपाने के लिये। कारण स्पष्ट है कि उत्तरदाता के मन में अपराध बोध तो है, इसलिये यह कार्य वे छुपकर करते हैं।

केवल 22 उत्तरदाता ऐसे पाये गये जो नशे का सेवन उजागर रूप से करते हैं और उनके परिवार में सभी सदस्य इस तथ्य से परिचित हैं। ऐसे लोगों का मानना है, कि इसको छिपाने की आवश्यकता इसलिये नहीं है कि उनको नशे की आदत पड़ चुकी है। ऐसे उत्तरदाताओं में व्यावसायिक लोग जैसे– डाक्टर, वकील आदि हैं। अतः परिवार में उनकी स्थिति शीर्षस्थ है इसलिये उनसे कोई कुछ नहीं कहता।

उर्युक्त विश्लेषण से एक तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ 138 अर्थात् 46.00 प्रतिशत व्यक्ति छिपकर पीते हैं वहीं अन्य 140 (79 + 34 +27) व्यक्ति (46.66 प्रतिशत) किसी न किसी प्रकार के नशीले पदार्थ के सेवन से व्यक्ति के मुख से दुर्गन्ध आती है, और निकटस्थ लोगों को तत्काल ही इसकी जानकारी हो जाती है। आजकल कुछ ऐसे नशीले पदार्थ भी हैं, जिनके सेवन से मुख से कोई दुर्गन्ध आदि नहीं फैलती। ऐसे नशाखोर व्यक्ति के बारे में सहज ही अनुमान लगाना आसान नहीं होता। ऐसे व्यक्ति की जानकारी तभी हो पाती है जबकि नशाखोर व्यक्ति असामान्य

व्यवहार या क्रिया–कलाप करता है। स्पष्ट है कि परिवार से अपनी हरकतों को छिपाने की बात नशे के सम्बन्ध में ही लागू होती है।

पत्नी नशेबाज पति को सहन भले ही कर ले, पर वह उसके साथ खुश नहीं रह पाती। इस स्थिति से केवल एक परिवार की ही नहीं वरन् सभी नशा सेवन करने वालों के परिवारों की स्त्रियों को गुजरना पड़ता है। जिससे पारिवारिक जीवन में सुख और शान्ति नहीं आ पाती, चाहे परिस्थितियों से समझौता भले ही कर लिया जाये।

ऐसी स्थिति वहाँ और भी विकराल रूप धारण कर लेती है, जहाँ परिवार में सिर्फ पति–पत्नी ही होते हैं। वहाँ पत्नी अपने अन्तर्मन के दुःखों को किसी से कह भी नहीं पाती और अकेले ही ऐसे घुटन भरे वातावरण में घुट–घुट जीवन निर्वाह करती रहती है।

नशाखोर के स्वास्थ्य के सन्दर्भ में निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया।

तालिका संख्या 3.11

स्वास्थ्य सम्बन्धी

क्र.सं.	निर्दर्शित	संख्या (पुरुष)	प्रतिशत
1.	स्वास्थ्यता	200	66.67
2.	अस्वास्थ्यता	100	33.33
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका में 200(66.67%) निर्दर्शितों ने अपने स्वास्थ्य के सामान्य बताया जोकि अपने आप में एक अच्छा प्रतिशतांक है अस्वास्थ्य निर्दर्शितों ने अर्थात् 100 (33.33%) अपने स्वास्थ्य को खराब होने की बात कही जो स्वास्थ्यता का प्रतीक नहीं हैं जो कि चिन्ता का विषय है।

जाति :

आजकल युवा पीढ़ी दिशा भ्रमित होती जा रही है। उन्हें एक सही मार्ग के लिये अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं की सहायता लेनी चाहिए। निम्न तालिका जाति सम्बन्धित नशाखोर युवकों की निम्नवत् है।

तालिका संख्या 3.12

उत्तरदाताओं की जाति (वर्ग)

क्र.सं.	जाति/वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1.	सामान्य वर्ग	15	05.00
2.	अ.पि. वर्ग	85	28.33
3.	अनु.जाति वर्ग	154	51.33
4.	अन्य वर्ग	46	15.33
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण के उपरान्त दृष्टिगोचर हो रहा है कि सर्वाधिक 154(51.33%) उत्तरदाता अनुसूचित जाति वर्ग के हैं और 85(28.33%) अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं। अन्य वर्ग के 46(15.33%)

सूचनादाता हैं तथा सबसे कम 15(5.00%) उत्तरदाता सामान्य वर्ग के हैं।

नशाखोर उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति :

युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की संस्कृति की धरोहर होती है। यह अपने प्रमुख उद्देश्य से न भटक जाये, इसलिये उससे बहुआयामी विकास हेतु युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन लाकर उसे राष्ट्र की मुख्य धारा अग्रसर करना आवश्यक है।

आज हमारे समाज के सामने युवाओं को समायोजित की बहुत बड़ी समस्या है जिनको सही मार्गदर्शन देना अनिवार्य है। जो अपने कर्तव्य का पालन करते हुये राष्ट्र के निर्माण में पूर्ण योगदान दें। आपको पूर्ण जागृत होने की आवश्यकता है, तथा अन्य लोगों को भी जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस क्रम में उन्हें शिक्षित करना है शिक्षा ज्ञान के दीप को प्रज्जवलित करती है। अगर युवकों को समय से जागृत किया जाये तो वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकते आपका मूल उद्देश्य ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करना है

तालिका संख्या 3.13
उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.सं.	शैक्षणिक स्थिति	संख्या पुरुष	प्रतिशत
1.	शिक्षित	200	66.67
2.	अशिक्षित	100	33.33
	योग	**300**	**100.00**

जो 200 उत्तरदाता शिक्षित पाये गये उनका शैक्षणिक स्तर सर्वाधिक 33.33 प्रतिशत हैं। ऐसे उत्तरदाता 200(66.67%) शिक्षित हैं, और केवल 100(33.33%) अशिक्षित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नगरों में शिक्षा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होता है।

तालिका संख्या 3.14

शैक्षणिक योग्यता

क्र.सं.	शैक्षणिक स्थिति	संख्या पुरुष	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	87	24.00
2.	5वीं कक्षा उत्तीर्ण	60	20.00
3.	8वीं कक्षा उत्तीर्ण	90	30.00
4.	हाईस्कूल	48	16.00
5.	इण्टरमीडिएट	09	03.33
6.	उच्च शिक्षा	06	02.00
	योग	**300**	**100.00**

जनगणना[2] के आधार पर प्रादेशिक निरक्षरता का प्रतिशत 58.40, साक्षरता का प्रतिशत 41.60 बताया गया है। परन्तु नगरों में शिक्षा के प्रसार और रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होने के कारण निरक्षरों की संख्या कम ही रहती है, अपेक्षाकृत ग्रामीणों के। अतः उपर्युक्त तालिका में कम प्रतिशत 21.00 निरक्षरों का है। उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 90(30.00%) आठवीं कक्षा उत्तरदाता हैं। निरक्षर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 87(29.00%) निरक्षर

60(60.00%) उत्तरदाताओं ने शोधकर्ता को पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण बताया 48(16.00%) उत्तरदाताओं ने हाईस्कूल उत्तीर्ण बताया और इण्टरमीडिएट 9(3.00%) और उच्च शिक्षा 6(2.00%) उत्तीर्ण उत्तरदाताओं ने बताया जबकि शैक्षिणिक योग्यता की तालिका को देखते हुये उच्च शिक्षा उत्तीर्ण बहुत कम प्रतिशत में हैं।

धर्म :

उत्तर प्रदेश में नशाखोरों के विश्लेषण का आगरा नगर के निर्बल वर्ग के युवकों में नशाखोरी की प्रवृत्ति का अध्ययन में विभिन्न धर्मों में सम्मिलित युवा हैं। जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या 3.15

विभिन्न धर्मो से सम्बन्धित नशाखोर

क्र.सं.	जातियाँ	संख्या पुरुष	प्रतिशत
1.	हिन्दू धर्म	147	49.00
2.	सिक्ख धर्म	23	07.66
3.	ईसाई धर्म	11	03.66
4.	मुस्लिम धर्म	99	33.00
5.	अन्य धर्म	20	06.66
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म में पाई जाने वाली जाति के उत्तरदाताओं की संख्या 147(49.00%) है, जो उनकी नशाखोरी को प्रवृत्ति को दर्शाती है। जबकि मुस्लिम सम्प्रदाय की जातियों के युवाओं की संख्या 99(33.33%) है। जो कि उनकी नशाखोरी की प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है। अतः इस तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि नशाखोर की प्रवृत्ति हिन्दू धर्म की जातियों व मुस्लिम सम्प्रदाय की जातियों में अधिक पाई जाती है, अपेक्षाकृत अन्य के।

मनुष्य जब प्राकृतिक एवं आखेटीय अवस्था में रहता था, तो प्राकृतिक घटनाओं एवं प्रकोपों की भयंकरता से आंतकित थी। उनका विश्वास था कि कोई अलौकिक शक्ति अवश्य ही है जो विश्व का संचालन करती है और इन प्राकृतिक घटनाओं के घटित होने का उसका हाथ है। अतः वह उस शक्ति के प्रति नतमस्तक हो उसे प्रसन्न करने में उसके अन्दर धार्मिक विचार पनपे। इस अर्थ में ''धर्म एक मानवीय अभिव्यक्ति है जो उस अलौकिक शक्ति की आराधना के रूप में विकसित हुई।''

भारत एक विशाल और विधिताओं से भरा देश है यहाँ आगरा नगर प्रचलित विभिन्न धर्मों के व्यक्तियों का धार्मिक अध्ययन किया है। इन धर्मों में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई और जैन प्रमुख हैं।

शोधकर्ता के प्रस्तुत सर्वेक्षण में उपर्युक्त सभी धर्मों के व्यक्तियों नशाखोरी की प्रवृत्ति पाई गई है।

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति :

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति निम्न तालिका द्वारा दर्शायी गयी हैं :–

तालिका संख्या 3.16

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्र.सं.	स्थिति	संख्या पुरुष	प्रतिशत
1.	अविवाहित	105	35.00
2.	विवाहित	195	65.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से दृष्टव्य है कि उत्तरदाताओं में जहाँ विवाहित पुरुषों का 195(65.00%) है वहीं अविवाहित पुरुषों का 105(35.00%) है। जबकि अविवाहित नशाखोरी की स्थित बहुत कम है।

नशाखोरी से सम्बन्धित साहित्य का मूल्यांकन :-

मादक पदार्थों का सेवन आदिकाल से ही चला आ रहा है। निजी शौक में हो या विभिन्न अवसरों और उत्सवों में संस्कार और समाज की परिपाटी की सेवन करना हो, इन पदार्थों का प्रचलन एक सीमित दायरे में ही रहा आया। पर 30–40 वर्षों में यह एक विश्वव्यापी समस्या के रूप उभर कर आया है।

समाजशास्त्रियों ने सामाजिक विघटन और मादक पदार्थों के सेवन को भली–भाँति पहचाना है और उसकी

विस्तृत चर्चा भी की है। मनोवैज्ञानिकों ने की मानसिक विकृतियों और असामान्य व्यवहार का कार्य कारण रिश्ता खोजा हे। समाजशास्त्रियों ने सामान्य एवं जधन्य अपराधों की विवेचना में मादक पदार्थों के अपराधिक प्रवृत्ति का प्रेरक बताया है।

नशा सेवन का प्रचलन शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक तेजी से बढ़ा है, और कोई वर्ग इससे अछूता नहीं रह पाया है।

मनोवैज्ञानिक व समाजशास्त्रीय सन्दर्भों में द्रव्य एक वह शब्द है आदत–निर्माण पदार्थ के लिये उपयोग किया जाता है, जो मस्तिष्क वस्नायु को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

यह आम जनता में अनेक प्रकार के रोगयुक्त और प्रतिकूल मनोभाव जागृत करता है। परन्तु कुछ द्रव्य सापेक्षित रूप से अघातक तथा व्यसन रहित होते हैं और उनमें हानिकारक शारीरिक प्रभाव की पाये जाते हैं। ऐसे द्रव्यों का उपयोग हैरोइन, कोकीन व एलएसडी जैसे अवैध द्रव्यों के उपयोग से तथा शराब, तम्बाकू, बार्बिटयूरेट व एम्फेटायाइन जैसे वैध द्रव्यों के सेवन से सुस्पष्ट विपरीत होता है, क्योंकि यह सभी अवैध और दुरूपयोग किये जाने वाले वैध इसके सेवन करने वाले व्यक्तियों पर स्पष्ट हानिकारक शारीरिक प्रभाव डालते हैं।

तालिका संख्या 3.17

उत्तरदाताओं के आवास का विवरण

क्र.सं.	आवास का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	पक्के	48	16.00
2.	कच्चे/पक्के (मिश्रित)	49	16.33
3.	झुग्मी झोपड़ी	149	49.66
4.	किरायेदार	54	18.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण के उपरान्त दृष्टिगोचर हो रहा है कि सर्वाधिक 49(16.33%) उत्तरदाता झुग्मी झोपड़ियों में निवास करते हैं तथा सबसे कम 54(18.00%) उत्तरदाता किराये के मकान में निवास करते हैं जबकि 48(16.00%) उत्तरदाताओं के पास अपने निजी पक्के मकान हैं। 49(16.33%) उत्तरदाता कच्चे/पक्के (मिश्रित) आवासों में निवास करते हैं।

तालिका संख्या 3.18

निर्धनता की सीमा रेखा के सापेक्ष उत्तरदाताओं की स्थिति

क्र.सं.	आवास का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	निर्धनता सीमा रेखा से ऊपर	60	20.00
2.	निर्धनता सीमा रेखा से नीचे	240	80.00
	योग	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता 240(80.00%) निर्धनता रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं जबकि 60(20.00%) उत्तरदाता निर्धनता रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे हैं।

❁●❁●❁